अध्याय 12

तस्वीर में वही आदमी

अगली सुबह युवराज ने कॉलेज पहुँचकर सबसे पहले अपने पिता का संदेश देखा।

उससे सामान्य ढंग से बात करना।

रात को उन्होंने यही बात सामने बैठकर कही थी। सुबह दोबारा लिखकर भेजने की क्या आवश्यकता थी, युवराज समझ नहीं पाया। उसने उत्तर में 'ठीक है' लिखा और फ़ोन जेब में रख लिया।

कक्षा के बाहर समर उसका इंतज़ार कर रहा था। युवराज ने दूर से हाथ उठाया और उसकी ओर बढ़ने लगा। तभी बगल की सीढ़ियों से वीर की हँसी सुनाई दी। उसका कदम अपने आप रुक गया।

वीर और ईशा ऊपर आ रहे थे। ईशा के हाथ में दो किताबें थीं। वीर उसके साथ चलते हुए उसे कुछ समझाने का प्रयास कर रहा था।

"मैंने किताब लौटाने को कहा था," ईशा बोली। "उसके बीच में अपनी चाय का हिसाब रखने को नहीं।"

"मुझे लगा तुम पढ़ते समय देख लोगी।"

"देख लिया। उसमें भी दो चाय कम लिखी हैं।"

वीर कुछ कहने ही वाला था कि उसकी दृष्टि युवराज पर पड़ी। सीढ़ी की आखिरी पायदान पर उसका पैर एक क्षण को ठहरा।

"सुप्रभात," युवराज ने कहा।

ईशा ने सिर हिलाया। वीर ने सहज स्वर में उत्तर दिया, "सुप्रभात।"

इतना कहकर युवराज आगे बढ़ सकता था। फिर उसे लगा कि इतनी जल्दी चले जाने से वीर समझ जाएगा कि वह उससे बच रहा है।

“अगले चरण की तैयारी कैसी चल रही है?” उसने पूछा।

“आरव और काव्या आज मशीन की जाँच करेंगे। तुम्हारी तैयारी?”

“हमारी भी हो जाएगी।”

युवराज ने ईशा की किताबों की ओर देखा, फिर सीढ़ियों की ओर।

“अच्छा, तो मिलते हैं।”

“युवराज।”

वीर ने इतनी सामान्य आवाज़ में पुकारा था कि ईशा को उसकी ओर देखने की आवश्यकता भी नहीं लगी। युवराज फिर भी तुरंत पलट गया।

“तुम्हारी कक्षा इस तरफ़ है,” वीर ने बाईं ओर संकेत किया।

युवराज जिस ओर जा रहा था, वहाँ से नीचे उतरने की सीढ़ियाँ थीं।

“हाँ। समर से कुछ लेना था।”

समर ठीक उसी कक्षा के बाहर खड़ा था जिसकी ओर वीर ने संकेत किया था। वह अब दोनों की ओर देख रहा था। युवराज ने इस बार कुछ और कहने का प्रयास नहीं किया। वह सीधे समर के पास चला गया।

ईशा ने उसके जाने के बाद पूछा, “तुम दोनों ने कभी सुबह-सुबह एक-दूसरे को सुप्रभात कहा है?”

“मुझे तो आज पहली बार याद पड़ता है।”

“मुझे भी।”

ईशा ने दोनों किताबें वीर के हाथ में रख दीं। “चलो। अब मेरे साथ आकर लौटाओ।”

वीर ने किताबें सँभालीं और उसके साथ चल दिया।

• • •

उसी समय युवराज के पिता अपने कार्यालय में रात की जाँच का पहला विवरण पढ़ रहे थे।

वीर के कॉलेज में प्रवेश की तारीख थी। प्रतियोगिता में उसका नाम था। उसके समूह के तीन अन्य विद्यार्थियों के नाम भी थे। उन्होंने पूरा विवरण पढ़ा। जितना युवराज रात को बता गया था, उससे आगे उन्हें कुछ पता नहीं चला।

उन्होंने फ़ोन उठाया।

“इसका पिछला विद्यालय?”

“अभी तक किसी रिकॉर्ड से पुष्टि नहीं हुई।”

“घर का पता?”

“कॉलेज में एक पता दर्ज है। उससे आगे परिवार के बारे में कुछ नहीं मिला।”

उन्होंने कुर्सी की पीठ से सिर टिका दिया। “हर बार तुम कॉलेज पर ही आकर क्यों रुक जाते हो?”

“अभी तक जो भी बात पक्की हुई है, वहीं से हुई है। उससे पहले का कोई साफ़ रिकॉर्ड हाथ नहीं आया।”

मेज पर युवराज का नियंत्रक रखा था। सुबह घर से निकलते समय वे उसे साथ ले आए थे। उन्होंने उसे उठाया, लेकिन स्क्रीन नहीं जलाई।

“शक्ति की खरीद का कोई विवरण?”

“उसके नाम से कुछ नहीं मिला। किसी और के नाम पर खरीदी गई हो, तो उसका पता लगाने के लिए पहले जानना होगा कि उसके परिवार में कौन है।”

पिता ने नियंत्रक वापस रखा। सुबह उनके अपने भंडार की जाँच भी हो चुकी थी। दर्ज संख्या पूरी थी। कुछ भी गायब होने की सूचना नहीं थी। फिर भी उन्होंने सूची दोबारा मँगवा ली थी।

रात में युवराज ने बताया था कि वीर की हथेली के पास पहुँचकर बिजली की चमक सिमट गई थी। पिता ने स्वयं कई बार दो शक्तियों को टकराते देखा था। उस अनुभव के आधार पर वे बता सकते थे कि युवराज को वहाँ क्या दिखाई देना चाहिए था। दिक्कत यह थी कि युवराज ने जो देखा, वह उससे अलग था।

“कॉलेज से पहले का कुछ ढूँढो,” उन्होंने कहा। “विद्यालय का कोई पुराना कार्यक्रम, कोई समूह-चित्र, कुछ भी। उसके बचपन से जुड़ी कोई चीज़ मिले तो पहले मुझे भेजना।”

फ़ोन रखकर उन्होंने नियंत्रक की स्क्रीन जलाई। रात के दोनों प्रहार उसी क्रम में दर्ज थे। वे उन्हें इतनी बार देख चुके थे कि स्क्रीन देखे बिना भी बता सकते थे कि दूसरा प्रहार पहले से कितना तेज़ था।

कुछ देर बाद उन्होंने नियंत्रक दराज़ में रख दिया और अगली बैठक के लिए फ़ाइल खोल ली। बैठक शुरू होने तक वे एक ही अनुच्छेद तीन बार पढ़ चुके थे।

• • •

दोपहर में आरव, काव्या, ईशा और वीर कैंटीन में बैठे थे। आरव अगले प्रदर्शन की तारीख देख रहा था। काव्या अपना खाने का डिब्बा खोल रही थी। ईशा ने वीर के सामने से उसकी प्लेट थोड़ी दूर कर दी थी। पिछली बार वह बातचीत शुरू होने से पहले ही दोनों के लिए मँगाए गए समोसे समाप्त कर चुका था।

तभी युवराज और समर कैंटीन में आए।

युवराज की दृष्टि उनकी मेज पर गई। वीर ने उसे आते देखा और सिर हिलाकर अभिवादन किया। युवराज ने भी हाथ उठाया। फिर वह उनके पास आकर रुक गया।

“कल पुस्तकालय के बाहर तुम्हारे हाथ में झटका लगा था,” उसने कहा। “अब ठीक है?”

वीर की उँगलियाँ कप के हत्थे पर थीं। “हाँ। अब ठीक है।”

“अच्छा।”

युवराज की दृष्टि उसकी हथेली पर गई। रात के बाद पहली बार उसे वह इतने पास से दिखाई दे रही थी। उस पर अब भी कोई निशान नहीं था।

वीर ने कप उठाया। युवराज अनायास आधा कदम पीछे हो गया। उसका पैर कुर्सी से लगा और कुर्सी खिसककर पीछे खड़े समर के जूते से टकराई।

“देखकर,” समर ने कहा।

“हाँ, ध्यान नहीं था।” युवराज ने कुर्सी सीधी की। फिर आरव से बोला, “अगले चरण के लिए शुभकामनाएँ।”

आरव ने सिर उठाया। “तुम्हें भी।”

युवराज आगे बढ़ गया। समर काउंटर पर कुछ कहने के लिए उसके पास झुका। युवराज ने धीमे स्वर में उत्तर दिया और मेजों के बीच ऐसी जगह जा बैठा जहाँ से वीर की ओर उसकी पीठ थी।

काव्या ने अपना डिब्बा बंद किया। “अचानक युवराज को क्या हुआ?”

“सुबह भी वीर से ऐसे ही बात कर रहा था,” ईशा ने कहा। “पहले मुझे लगा शायद अकेले में ऐसे बात करता हो।”

आरव ने सामने रखा प्रपत्र मोड़ दिया। “कल तक उसे जानना था कि हमारी मशीन कैसे चली। आज उसे वीर के हाथ की चिंता है।”

तीनों की दृष्टि वीर पर आकर रुकी।

“मैं क्या जानूँ?” वीर ने कहा।

“वह तुम्हारा हाथ ऐसे देख रहा था जैसे उस पर कुछ ढूँढ रहा हो,” ईशा बोली।

वीर ने हथेली पलटकर देखी। “तुम्हें कुछ दिख रहा है?”

ईशा ने उसकी हथेली पर एक समोसा रख दिया। “अब दिख रहा है।”

काव्या हँस पड़ी। आरव ने प्रपत्र फिर खोल लिया। कुछ देर बाद चारों अगले परीक्षण की तैयारी पर बात करने लगे।

जब वीर पानी लेने उठा, युवराज काउंटर के पास अकेला खड़ा था। उसे आते देखकर युवराज ने अपनी बोतल का ढक्कन घुमाना शुरू किया। दो बार प्रयास करने पर भी ढक्कन नहीं खुला। तब उसे ध्यान आया कि वह उलटी दिशा में घुमा रहा था।

वीर उसके पास आकर रुका। “हाथ ठीक है?”

युवराज ने तुरंत अपनी कलाई देखी।

“हाँ। बस थोड़ा निशान है।”

वीर ने सिर हिलाया और काउंटर पर रखी दूसरी बोतल उठा ली।

“कल की बात समझ गया हूँ,” युवराज ने कहा।

वीर ने बोतल का ढक्कन खोलते हुए उसकी ओर देखा। पास ही किसी ने चाय के पैसे दिए। पीछे एक कुर्सी खिसकी। युवराज को लगा वीर कुछ पूछेगा। वह मन ही मन उत्तर सोचने लगा।

“अच्छा है,” वीर ने कहा और अपनी मेज पर लौट गया।

युवराज ने इस बार बोतल खोल ली। पिता ने उससे कहा था कि वीर को लगना चाहिए कि वह उसकी बात समझ गया है। वह यही कहने आया था। अब बात कह देने के बाद उसे लगा, शायद पिता के कहे बिना भी उसे वीर से यही कहना पड़ता।

• • •

शाम तक युवराज के पिता को दो और सूचनाएँ मिलीं। पहली बार कॉलेज की एक पुरानी सूची भेजी गई, जिसमें वही नाम थे जो सुबह के विवरण में थे। दूसरी बार बताया गया कि पूछताछ में सहायता कर सकने वाला एक व्यक्ति शहर से बाहर था और उससे अगले दिन बात हो पाएगी।

वे घर पहुँचे तो युवराज अपने कमरे में समर से फ़ोन पर प्रतियोगिता की तैयारी के बारे में बात कर रहा था। वे सीढ़ियों के पास से होते हुए बैठक में चले गए।

वहाँ उन्होंने अपने लिए व्हिस्की डाली और खिड़की के पास वाली कुर्सी पर बैठ गए। गिलास उठाया ही था कि फ़ोन पर संदेश आया।

वीर के बचपन की एक तस्वीर मिली है।

उन्होंने तस्वीर खोली। एक स्त्री बच्चे को गोद में ले रही थी। उसके पास खड़ा पुरुष थोड़ा झुककर बच्चे का सिर सँभालने के लिए हाथ बढ़ा रहा था। दोनों चेहरे उनके लिए अनजान थे।

उन्होंने तस्वीर बड़ी की। बच्चे को सौंपने वाले आदमी का चेहरा अब साफ़ दिखाई देने लगा।

उनका हाथ वहीं ठहर गया।

वे उस आदमी को पहचानते थे। कभी वह उनके अपने समूह का सदस्य था। बाद में उसे पकड़ने के लिए उन्होंने कई लोगों को भेजा था। सब खाली हाथ लौटे थे।

उन्होंने बच्चे को फिर देखा। स्त्री उसे अपनी गोद में ले चुकी थी, फिर भी बच्चे की एक मुट्ठी ने उस आदमी की कमीज़ का कोना पकड़ रखा था।

कहीं यह हमारे ही समूह में किसी का बच्चा तो नहीं*?*

उन्हें उस स्त्री का चेहरा याद आया जिससे कभी वे प्रेम करते थे। तस्वीर पर उनकी उँगली ठहर गई।

कहीं यह उसका बच्चा तो नहीं*?* क्या इसने उसे बचाकर इन लोगों को सौंप दिया था*?*

व्हिस्की का गिलास उनके हाथ से छूटकर फ़र्श पर टूट गया। वे कुर्सी पर वैसे ही बैठे रहे। फ़ोन अब भी उनके दूसरे हाथ में था।

“पापा?”

युवराज सीढ़ियाँ उतरकर दौड़ता हुआ आया। उसने पहले फ़र्श पर बिखरा काँच देखा, फिर पिता का चेहरा।

“पापा, क्या हुआ? आप ठीक हैं?”

पिता ने होंठ खोले, लेकिन कुछ बोल नहीं पाए। युवराज उनके पास झुका। फ़ोन की स्क्रीन जल रही थी। उसकी दृष्टि तस्वीर पर पड़ी तो वह कुछ क्षण वहीं ठहरा रहा।

“अरे, ये तो आरव है!” युवराज तस्वीर के और पास झुका। “ये बच्चा इसका है? कॉलेज में तो इसकी गर्लफ्रेंड भी है।”

पिता ने उसकी बाँह पकड़ ली। “तुम्हें इसका नाम कैसे पता?”

“पापा, ये हमारे साथ ही पढ़ता है।”

उनकी पकड़ ढीली पड़ गई।

“तुमने इसे आखिरी बार कब देखा?”

“आज ही तो देखा था। कॉलेज में।” युवराज ने फ़ोन की ओर देखा। “आपको इसकी फोटो कहाँ मिली?”

पिता ने स्क्रीन बंद कर दी। “तुम ऊपर जाओ।”

“पर पापा, पहले मैं ये काँच—”

“मैंने कहा ना, जाओ यहाँ से!”

युवराज वहीं ठिठक गया। पिता ने उसे पहली बार इस तरह डाँटा था। कल रात वीर पर किए गए प्रहारों के बारे में सुनकर भी उन्होंने उससे इतनी ऊँची आवाज़ में बात नहीं की थी।

वह चुपचाप सीढ़ियाँ चढ़ गया। कमरे तक पहुँचते-पहुँचते उसका ध्यान फिर तस्वीर पर चला गया। आरव बच्चे को गोद में लिए ऐसे खड़ा था जैसे यह उसके लिए रोज़ की बात हो। कल जब वह कॉलेज में सबके सामने बच्चे का ज़िक्र करेगा, तब देखेगा कि आरव क्या कहता है।

कल इसकी पोल खोलूँगा।

नीचे उसके पिता उसी कुर्सी पर बैठे थे। ऊपर युवराज के कमरे का दरवाज़ा बंद हुआ तो उन्होंने तस्वीर फिर खोली। इस बार उनकी नज़र नीचे कोने में छपी तारीख पर गई। उन्होंने उँगलियों से तस्वीर बड़ी की और तारीख दोबारा पढ़ी।

यह तस्वीर तो बीस साल पुरानी है। तब भी तुम अचानक कहीं से आए थे और हमारे समूह में शामिल हो गए थे। और आज... आज तुम मेरे बेटे के साथ पढ़ते हो*?*

उनकी नज़र फिर उसी चेहरे पर टिक गई।

कौन हो तुम*?* कहाँ से आए हो*?* आखिर हो क्या तुम*?*